अन्योक्तयः

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» अन्योक्ति का अर्थ और महत्व

प्रश्न 1 (आसान). अन्योक्ति का सीधा अर्थ क्या है?

उत्तर – अप्रत्यक्ष कथन।

प्रश्न 2 (आसान). अन्योक्ति में बात सीधे क्यों नहीं कही जाती?

उत्तर – बात को अधिक प्रभावशाली बनाने या सामने वाले को बुरा लगने से बचाने के लिए।

प्रश्न 3 (मध्यम). आप एक ऐसे व्यक्ति की प्रशंसा करने के लिए अन्योक्ति का उपयोग कैसे करेंगे जो चुपचाप रहकर दूसरों की बहुत मदद करता है?

उत्तर – हम कह सकते हैं कि 'जैसे पेड़ हमें फल और छाया देते हैं बिना कुछ माँगे, वैसे ही कुछ लोग चुपचाप मदद करते हैं, जिनकी महिमा दिखती नहीं पर महसूस होती है।'।

प्रश्न 4 (कठिन). अगर कोई मित्र बिना सोचे-समझे हर किसी की बात मान लेता है, तो उसे सावधान करने के लिए किस अन्योक्ति का प्रयोग करेंगे? (संकेत: चातक पक्षी का उदाहरण)

उत्तर – हम चातक पक्षी का उदाहरण दे सकते हैं कि 'देखो चातक, वह सिर्फ़ स्वाति नक्षत्र की बूँद पीता है, किसी भी बादल से नहीं माँगता। तुम भी हर किसी की बात पर भरोसा मत करो, सोच-समझकर फ़ैसला लो।'।

» राजहंस और सरोवर की शोभा (श्लोक 1)

प्रश्न 5 (आसान). सरोवर की शोभा किससे बताई गई है?

उत्तर – एक राजहंस से।

प्रश्न 6 (आसान). कौन सरोवर के किनारे रहते हैं और फिर भी उसकी शोभा नहीं बढ़ाते?

उत्तर – हज़ारों बगुले।

प्रश्न 7 (मध्यम). इस श्लोक में 'गुणवत्ता' और 'संख्या' में से किसे ज़्यादा महत्व दिया गया है?

उत्तर – गुणवत्ता को।

प्रश्न 8 (कठिन). यह श्लोक 'अन्योक्ति' का उदाहरण कैसे है?

उत्तर – यह सीधे-सीधे मनुष्य के गुणों की बात नहीं कर रहा, बल्कि राजहंस और बगुलों का उदाहरण देकर समझा रहा है कि किसी भी जगह या चीज़ की असली पहचान उसके अच्छे गुणों से होती है, न कि सिर्फ़ संख्या से।

» राजहंस का प्रत्युपकार (श्लोक 2)

प्रश्न 9 (आसान). राजहंस ने सरोवर से क्या-क्या प्राप्त किया?

उत्तर – राजहंस ने सरोवर से कमलनाल (भोजन) और मीठा पानी प्राप्त किया।

प्रश्न 10 (आसान). कृतज्ञता का क्या अर्थ है?

उत्तर – कृतज्ञता का अर्थ है किसी के उपकार को मानना और उसके प्रति आभार व्यक्त करना।

प्रश्न 11 (मध्यम). यह श्लोक हमें किस मानवीय मूल्य के बारे में सिखाता है?

उत्तर – यह श्लोक हमें कृतज्ञता और प्रत्युपकार के महत्व के बारे में सिखाता है।

प्रश्न 12 (कठिन). यदि राजहंस सरोवर के प्रति अपना कर्तव्य नहीं निभाता, तो इसका क्या नैतिक निहितार्थ होगा?
उत्तर – यदि राजहंस कर्तव्य नहीं निभाता, तो यह कृतघ्नता होगी, यानी उपकार को न मानना। यह हमें सिखाता है कि हम दूसरों से लाभ उठाकर उन्हें भूल न जाएं।

» मालाकार और मेघ का पोषण (श्लोक 3)

प्रश्न 13 (आसान). मालाकार ने वृक्ष का पोषण किस ऋतु में किया?
उत्तर – गर्मी (निदाघ) ऋतु में।

प्रश्न 14 (आसान). मेघ किस ऋतु में जल बरसाता है?
उत्तर – वर्षा (प्रावृषेण्येन) ऋतु में।

प्रश्न 15 (मध्यम). श्लोक के अनुसार, किसका दान मात्रा में अधिक था?
उत्तर – मेघ का दान मात्रा में अधिक था (ढेरों जल)।

प्रश्न 16 (कठिन). इस श्लोक से हमें क्या सीख मिलती है?
उत्तर – इस श्लोक से हमें यह सीख मिलती है कि किसी की ज़रूरत के समय, भले ही थोड़ी ही क्यों न हो, की गई मदद बहुत महत्वपूर्ण होती है। मात्रा से ज़्यादा, समय और भावना का महत्व होता है।

» संकुचित सरोवर में दीन मछली (श्लोक 4)

प्रश्न 17 (आसान). जब सरोवर संकुचित होता है, तो कौन दीन हो जाता है?
उत्तर – मछली (मीन)

प्रश्न 18 (आसान). पक्षी कहाँ चले जाते हैं?
उत्तर – आकाश में (अम्बरपथम्)

प्रश्न 19 (मध्यम). भौंरे किस पर आश्रय लेते हैं?
उत्तर – आम के बौर पर (रसालमुवुफलानि)

प्रश्न 20 (कठिन). यह श्लोक किस मानवीय स्थिति को दर्शाता है?
उत्तर – संकट में असहाय व्यक्ति की स्थिति को।

» स्वाभिमानी चातक (श्लोक 5)

प्रश्न 21 (आसान). वन में कौन सा पक्षी 'मानी' कहा गया है?
उत्तर – चातक

प्रश्न 22 (आसान). चातक किससे जल मांगता है?
उत्तर – पुरन्दरम् (इंद्र से)

प्रश्न 23 (मध्यम). चातक की कौन सी दो क्रियाएँ उसके स्वाभिमान को दर्शाती हैं?
उत्तर – वह या तो प्यासा मर जाता है, या केवल इंद्र से ही जल मांगता है।

प्रश्न 24 (कठिन). इस श्लोक से हमें जीवन के लिए क्या शिक्षा मिलती है?
उत्तर – यह श्लोक हमें सिखाता है कि हमें भी जीवन में अपने आत्म-सम्मान और सिद्धांतों पर अडिग रहना चाहिए, और कठिनाई में भी अपनी मर्यादा नहीं छोड़नी चाहिए।

» मेघ की उत्तम श्री (श्लोक 6)

प्रश्न 25 (आसान). मेघ किसे तृप्त करता है?
उत्तर – पहाड़ों और वनों को।

प्रश्न 26 (आसान). मेघ क्या भरकर स्वयं खाली होता है?
उत्तर – नदियाँ और नद।

प्रश्न 27 (मध्यम). मेघ की उत्तम श्री क्या है?
उत्तर – दूसरों को तृप्त करके स्वयं रिक्त हो जाना।

प्रश्न 28 (कठिन). इस श्लोक से हमें क्या नैतिक शिक्षा मिलती है?
उत्तर – हमें निस्वार्थ भाव से दूसरों की सेवा करनी चाहिए और देने में ही सच्ची शोभा माननी चाहिए।

» चातक को सावधान रहने की सलाह (श्लोक 7)

प्रश्न 29 (आसान). श्लोक में किसे सावधान मन से सुनने को कहा गया है?
उत्तर – चातक को।

प्रश्न 30 (आसान). आकाश में सभी बादल एक जैसे क्यों नहीं होते?
उत्तर – क्योंकि कुछ बरसते हैं और कुछ केवल गरजते हैं।

प्रश्न 31 (मध्यम). दीन वचन किसे नहीं कहने चाहिए?
उत्तर – हर किसी के सामने नहीं कहने चाहिए।

प्रश्न 32 (कठिन). इस श्लोक से हमें क्या नैतिक शिक्षा मिलती है?
उत्तर – इस श्लोक से हमें यह नैतिक शिक्षा मिलती है कि हमें हर किसी से अपनी समस्याएँ साझा नहीं करनी चाहिए और न ही सबसे मदद की उम्मीद रखनी चाहिए, बल्कि समझदारी से सही व्यक्ति का चुनाव करना चाहिए।

» शब्दार्थ और अन्वय

प्रश्न 33 (आसान). शब्दार्थ का क्या अर्थ है?
उत्तर – श्लोक में आए कठिन शब्दों के अर्थ को समझना।

प्रश्न 34 (आसान). अन्वय से हमें क्या लाभ होता है?
उत्तर – अन्वय से श्लोक के वाक्यों को सीधा करके, उसके अर्थ को स्पष्ट रूप से समझने में मदद मिलती है।

प्रश्न 35 (मध्यम). श्लोक के अर्थ को स्पष्ट करने में शब्दार्थ और अन्वय एक साथ कैसे मदद करते हैं?
उत्तर – पहले शब्दार्थ से कठिन शब्दों का मतलब जानते हैं, फिर अन्वय से उन शब्दों को सही व्याकरण क्रम में रखकर पूरे श्लोक का सटीक अर्थ समझते हैं।

» अभ्यास प्रश्नोत्तर

प्रश्न 36 (आसान). कः पिपासितः म्रियते? (एकपदेन उत्तरत)
उत्तर – चातकः

प्रश्न 37 (आसान). अम्भोदाः कुत्र सन्ति? (एकपदेन उत्तरत)
उत्तर – गगने

प्रश्न 38 (मध्यम). चातकः किमर्थं मानी कथ्यते? (पूर्णवाक्येन उत्तरत)
उत्तर – चातकः मानी कथ्यते यतो हि सः पिपासितो वा म्रियते याचते वा पुरन्दरम्।

प्रश्न 39 (कठिन). जलदः नानानदीनदशतानि पूरयित्वा रिक्तः अस्ति। (रेखांकित पदम् आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत)
उत्तर – जलदः कानि पूरयित्वा रिक्तः अस्ति?

» भावार्थ और अन्वय लेखन

प्रश्न 40 (आसान). श्लोक: 'एक एव खगो मानी वने वसति चातकः। पिपासितो वा म्रियते याचते वा पुरन्दरम्।।' इसका अन्वय लिखो।
उत्तर – एकः एव मानी खगः चातकः वने वसति, वा पिपासितः म्रियते वा पुरन्दरम् याचते।

प्रश्न 41 (आसान). 'राजहंसेन सरसः शोभा भवेत्।' इस अन्वय का भावार्थ एक वाक्य में लिखो।
उत्तर – राजहंस के होने से तालाब की सुंदरता बढ़ती है।

प्रश्न 42 (मध्यम). श्लोक: 'एकेन राजहंसेन या शोभा सरसो भवेत् । न सा बकसहस्रेण परितस्तीरवासिना ।।' इसका भावार्थ लिखो।
उत्तर – इस श्लोक का भावार्थ यह है कि किसी तालाब की शोभा एक अकेले राजहंस से होती है, न कि किनारे पर रहने वाले हजारों बगुलों से। मतलब, गुणवत्ता संख्या से ज़्यादा महत्वपूर्ण होती है। एक गुणी व्यक्ति बहुत से साधारण लोगों से बेहतर होता है।

प्रश्न 43 (कठिन). श्लोक: 'आश्वास्य पर्वतवुफलं तपनोष्णतप्त- मुद्दामदावविधु्राणि च काननानि । नानानदीनदशतानि च पूरयित्वा, रिक्तो{सि यज्जलद! सैव तवोत्तमा श्रीः ।।' इसका अन्वय और भावार्थ लिखो।
उत्तर – अन्वय: हे जलद! तपनोष्णतप्तम् पर्वतकुलम् आश्वास्य, उद्दामदावविधुराणि काननानि च आश्वास्य, नानानदीनदशतानि च पूरयित्वा, यत् रिक्तः असि, सा एव तव उत्तमा श्रीः।
भावार्थ: हे बादल! सूर्य की गर्मी से तपे हुए पहाड़ों को और प्रचंड अग्नि से व्याकुल वनों को शांत करके, तथा सैकड़ों नदियों और नदों को भरकर, यदि तुम स्वयं खाली हो जाते हो, तो यही तुम्हारी सबसे बड़ी शोभा, सबसे बड़ी महिमा है। इसका अर्थ यह है कि परोपकार के लिए स्वयं को समर्पित कर देना ही सबसे श्रेष्ठ कार्य है, और ऐसे त्याग में ही सच्ची महानता है।

» संधि और समास अभ्यास

प्रश्न 44 (आसान). तव + उत्तमा का संधि करें।
उत्तर – तवोत्तमा

प्रश्न 45 (आसान). को{पि का संधि विच्छेद करें।
उत्तर – कः + अपि

प्रश्न 46 (मध्यम). वृष्टिभिरार्द्रयन्ति का संधि विच्छेद करें।
उत्तर – वृष्टिभिः + आर्द्रयन्ति

प्रश्न 47 (कठिन). सावधानेन च तत् मनः, तेन - का समस्त पद बनाएं।
उत्तर – सावधनमनसा

» कवि परिचय और पाठ परिचय

प्रश्न 48 (आसान). पंडितराज जगन्नाथ की प्रमुख रचना का नाम क्या है?
उत्तर – भामिनीविलास

प्रश्न 49 (आसान). महाकवि माघ की रचना का नाम बताइए।
उत्तर – शिशुपालवधम्

प्रश्न 50 (मध्यम). 'अन्योक्तयः' पाठ में किस शैली का प्रयोग किया गया है?
उत्तर – अप्रत्यक्ष रूप से किसी गुण की प्रशंसा या दोष की निंदा।

प्रश्न 51 (कठिन). 'भामिनीविलास', 'शिशुपालवधम्' और 'नीतिशतकम्' ग्रंथों के रचयिताओं के नाम क्रमशः लिखिए।
उत्तर – पंडितराज जगन्नाथ, महाकवि माघ, भर्तृहरि

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. अगर आपको किसी दोस्त को यह समझाना है कि मेहनत करने वाला ही सफल होता है, आलसी नहीं, तो आप अन्योक्ति का प्रयोग कैसे करेंगे?

› पहले सोचें कि किस चीज़ का उदाहरण दे सकते हैं जो मेहनती हो और जो आलसी हो।

› मेहनती के लिए चींटी या मधुमक्खी का उदाहरण अच्छा रहेगा। आलसी के लिए कोई ऐसा जीव जो बस बैठा रहता है।

› फिर उस उदाहरण के माध्यम से अपनी बात कहें।

› जैसे: 'देखो, वो छोटी सी चींटी दिन भर कितनी मेहनत करती है, अपना खाना इकट्ठा करती है, तभी सर्दियों में उसे भूखा नहीं रहना पड़ता। और जो बस बैठे रहते हैं, उन्हें कुछ नहीं मिलता।'

› यहाँ चींटी के माध्यम से हम दोस्त को मेहनत का महत्व समझा रहे हैं, बिना उसे सीधा 'तुम आलसी हो' कहे।

› फिर आखिर में आप अपनी बात का सार निकाल सकते हैं, 'इसलिए हमें भी चींटी की तरह मेहनती होना चाहिए, तभी हमें सफलता मिलेगी।'।

उत्तर – चींटी का उदाहरण देकर मित्र को मेहनत का महत्व समझाना।

उदाहरण 2. यह श्लोक हमें क्या मुख्य सीख देता है?

› श्लोक का अनुवाद है: 'जिस प्रकार एक ही राजहंस से सरोवर की शोभा होती है, वह शोभा तट पर रहने वाले हज़ारों बगुलों से नहीं होती।'

› यहां 'राजहंस' किसी अच्छी और महत्वपूर्ण चीज़ का प्रतीक है, और 'हज़ारों बगुले' साधारण या कम महत्वपूर्ण चीज़ों का प्रतीक हैं, जो बड़ी संख्या में हैं।

› सरोवर की शोभा सिर्फ़ राजहंस से है, बगुलों से नहीं, भले ही वे हज़ारों हों।

› इसका अर्थ है कि किसी चीज़ की असली कीमत उसकी गुणवत्ता में होती है, न कि उसकी संख्या में।

उत्तर – यह श्लोक हमें यह सिखाता है कि गुणवत्ता हमेशा संख्या से अधिक महत्वपूर्ण होती है। एक अच्छी और योग्य चीज़ हज़ारों साधारण चीज़ों से ज़्यादा मूल्यवान होती है।

उदाहरण 3. यह श्लोक राजहंस से क्या प्रश्न करता है?

› श्लोक का पहला भाग कहता है 'भुक्ता मृणालपटली भवता निपीतानि अम्बूनि यत्र नलिनानि निषोवितानि'। इसका अर्थ है कि तुमने कमलनाल खाए, पानी पिया और कमलों में वास किया।

› श्लोक का दूसरा भाग 'रे राजहंस! वद तस्य सरोवरस्य, कृत्येन केन भवितासि कृतोपकारः' पूछता है कि उस सरोवर के लिए तुमने कौन सा उपकार किया है।

› तो प्रश्न यह है कि राजहंस ने जिस सरोवर से लाभ उठाया, उसके लिए उसने बदले में क्या किया।

उत्तर – यह श्लोक राजहंस से पूछता है कि जिस सरोवर में उसने कमलनाल खाए, पानी पिया और कमलों में रहा, उस सरोवर के प्रति उसने कौन सा उपकार किया है।

उदाहरण 4. मालाकार और मेघ के पोषण में, इस श्लोक के अनुसार, किसका कार्य अधिक महत्वपूर्ण माना गया है?

› पहले श्लोक के अर्थ को समझो: मालाकार ने गर्मी में, थोड़े जल से वृक्ष का पोषण किया।

› मेघ ने वर्षाकाल में, बहुत सारा जल बरसाया।

› श्लोक प्रश्न पूछता है कि क्या मेघ मालाकार के पोषण के बराबर हो सकता है, यह दर्शाता है कि नहीं।

› निष्कर्ष निकालो: सही समय पर किया गया छोटा, दयालु कार्य अधिक महत्वपूर्ण है।

उत्तर – श्लोक के अनुसार, मालाकार का कार्य अधिक महत्वपूर्ण माना गया है, क्योंकि उसने भीषण गर्मी में थोड़े जल से वृक्ष को जीवन दिया, जब उसे सबसे अधिक आवश्यकता थी। मेघ का अत्यधिक जल बरसाना तब तक उतना प्रभावी नहीं जब तक कि सही समय पर मदद न मिले।

उदाहरण 5. श्लोक के आधार पर समझाइए कि 'संकट में असहाय की स्थिति' कैसी होती है?

› पहले हम श्लोक का अर्थ समझेंगे: इसमें बताया गया है कि पक्षी आकाश में उड़ गए हैं, भौंरे आम के बौर पर जा बैठे हैं, यानी सब बड़े जीव अपनी नई जगह पा चुके हैं।

› अब तालाब (सरोवर) संकुचित हो रहा है, यानी धीरे-धीरे सूख रहा है या छोटा हो रहा है।

› ऐसे में उस तालाब में रहने वाली छोटी सी, दीन मछली, जो कहीं और जा नहीं सकती, उसकी क्या गति होगी? वह कहाँ जाएगी?

› यह दिखाता है कि जब बड़े और सक्षम जीव अपने लिए रास्ता ढूंढ लेते हैं, और स्थिति लगातार बिगड़ती जा रही है, तब एक असहाय जीव जो खुद से कुछ नहीं कर सकता, वह पूरी तरह से संकट में घिर जाता है और उसकी कोई मदद नहीं होती।

उत्तर – संकट में असहाय की स्थिति वह होती है जहाँ जीव के पास अपनी रक्षा करने या कहीं और जाने का कोई साधन नहीं होता, और उसके चारों ओर की परिस्थितियाँ उसके विपरीत हो जाती हैं, जिससे वह पूरी तरह से लाचार हो जाता है।

उदाहरण 6. श्लोक के अनुसार चातक की दो प्रमुख विशेषताएँ क्या हैं?

› श्लोक की पहली पंक्ति पर ध्यान दो: 'एक एव खगो मानी वने वसति चातकः।' यहाँ 'मानी' शब्द चातक की पहली विशेषता बताता है, जिसका अर्थ है स्वाभिमानी।

› श्लोक की दूसरी पंक्ति देखो: 'पिपासितो वा म्रियते याचते वा पुरन्दरम्।' इसका मतलब है कि वो या तो प्यासा मर जाता है, या इंद्र से मांगता है।

› इन दोनों पंक्तियों को मिलाकर हम चातक की मुख्य विशेषताएँ समझ सकते हैं।

उत्तर – चातक की दो प्रमुख विशेषताएँ हैं: 1. वह बहुत स्वाभिमानी (मानी) है। 2. वह या तो प्यासा मर जाता है या सीधे इंद्र (पुरन्दर) से जल मांगता है, किसी और से नहीं।

उदाहरण 7. श्लोक के अनुसार मेघ की उत्तम श्री किसमें है?

› पहले श्लोक को ध्यान से पढ़ें: 'आश्वास्य पर्वतकुलं तपनोष्णतप्त-मुद्दामदावविधुराणि च काननानि। नानानदीनदशतानि च पूरयित्वा, रिक्तोऽसि यज्जलद! सैव तवोत्तमा श्रीः।।'

› श्लोक का पहला भाग कहता है 'पर्वतकुलं तपनोष्णतप्त-मुद्दामदावविधुराणि च काननानि आश्वास्य' - यानी सूर्य की गर्मी से तपे हुए पहाड़ों और आग से व्याकुल वनों को आराम देकर (पानी बरसाकर)।

› दूसरा भाग है 'नानानदीनदशतानि च पूरयित्वा' - यानी बहुत सारी नदियों और नदों को भरकर।

› तीसरा भाग सबसे महत्वपूर्ण है 'रिक्तोऽसि यज्जलद! सैव तवोत्तमा श्रीः' - यानी हे बादल! जब तुम यह सब करके खुद खाली हो जाते हो, वही तुम्हारी सबसे बड़ी शोभा है।

› तो, मेघ की उत्तम श्री स्वयं को खाली करके दूसरों को तृप्त करने में है।

उत्तर – मेघ की उत्तम श्री पहाड़ों और वनों को पानी से तृप्त करके, तथा नदियों को भरकर, स्वयं खाली हो जाने में है।

उदाहरण 8. श्लोक के अनुसार चातक को किस बात की सलाह दी जा रही है और क्यों?

› पहला चरण: श्लोक में 'रे रे मित्रा चातक! सावधनमनसा क्षणं श्रूयताम्' कहकर चातक को 'सावधान मन से सुनने' को कहा गया है।

› दूसरा चरण: आगे कहा गया है कि 'गगने हि बहवः अम्भोदाः सन्ति, सर्वे अपि एतादृशाः न'। इसका मतलब है आकाश में बहुत बादल हैं, पर सब एक जैसे नहीं।

› तीसरा चरण: 'वेफचित् घ्रिणीं वृष्टिभिः आद्रयन्ति, वेफचिद् वृथा गर्जन्ति'। यानी कुछ धरती को भिगोते हैं (बरसते हैं), और कुछ सिर्फ व्यर्थ में गरजते हैं।

› चौथा चरण: निष्कर्ष में कहा गया है 'यं यं पश्यसि तस्य तस्य पुरतः दीनं वचः मा ब्रूहि'। यानी जिसे भी देखो, उसके सामने दीन वचन मत कहो।

› पांचवां चरण: इन सब बातों को जोड़कर, चातक को यह सलाह दी जा रही है कि उसे हर किसी के सामने अपनी पीड़ा या अपनी ज़रूरतों को नहीं बताना चाहिए, क्योंकि हर कोई मदद करने वाला नहीं होता।

उत्तर – श्लोक के अनुसार चातक को सावधान मन से सुनकर यह समझने की सलाह दी जा रही है कि सभी बादल (या लोग) एक जैसे नहीं होते; कुछ ही मदद करते हैं, बाकी व्यर्थ का दिखावा करते हैं। इसलिए, चातक को हर किसी के सामने दीन वचन या अपनी समस्या नहीं कहनी चाहिए।

उदाहरण 9. श्लोक: 'एक एव खगो मानी वने वसति चातकः। पिपासितो वा म्रियते याचते वा पुरन्दरम्।।' का शब्दार्थ और अन्वय कीजिए।

› पहला चरण: कठिन शब्दों के अर्थ जानना।

› एव - ही

› खगः - पक्षी

› मानी - स्वाभिमानी

› वने - वन में

› वसति - रहता है

› चातकः - चातक पक्षी

› पिपासितो - प्यासा

› वा - या

› म्रियते - मर जाता है

› याचते - माँगता है

› पुरन्दरम् - इन्द्र से (वर्षा के देवता)

› दूसरा चरण: इन शब्दों को गद्य के क्रम में व्यवस्थित करना।

› संस्कृत में क्रिया अक्सर आखिर में आती है, और शब्दों का क्रम थोड़ा अलग होता है। हमें इसे हिन्दी के वाक्य जैसा सीधा करना है।

उत्तर – अन्वय: वने एक एव मानी खगः चातकः वसति। पिपासितो वा म्रियते वा पुरन्दरम् याचते। (वन में एक ही स्वाभिमानी पक्षी चातक रहता है। (वह) या तो प्यासा मर जाता है या (केवल) इन्द्र से माँगता है।)

उदाहरण 10. नीचे दिए गए श्लोक के आधार पर प्रश्न का उत्तर दें और प्रश्न-निर्माण करें।

श्लोक: 'एकेन राजहंसेन या शोभा सरसो भवेत्। न सा बकसहस्रेण परितस्तीरवासिना।।'

प्रश्न 1: 'एकपदेन उत्तरत: कस्य शोभा एकेन राजहंसेन भवति?'

प्रश्न 2: 'पूर्णवाक्येन उत्तरत: सरसः शोभा केन न भवति?'

प्रश्न 3: 'रेखांकित पदम् आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत: 'बकसहस्रेण' सा शोभा न भवति।'

› प्रश्न 1 (एकपदेन): पहले श्लोक का अर्थ समझो। 'एक राजहंस से तालाब की जो शोभा होती है, वैसी शोभा चारों ओर रहने वाले हज़ार बगुले से नहीं होती।' प्रश्न है, 'किसकी शोभा एक राजहंस से होती है?'। श्लोक में 'सरसः' (तालाब की) लिखा है।

› प्रश्न 2 (पूर्णवाक्येन): 'तालाब की शोभा किससे नहीं होती?'। श्लोक कहता है 'बकसहस्रेण परितस्तीरवासिना' (चारों ओर रहने वाले हज़ार बगुलों से)। तो पूरा वाक्य बनाना है।

› प्रश्न 3 (प्रश्न-निर्माण): 'बकसहस्रेण' (हजार बगुलों से) इस पद को हटाकर ऐसा प्रश्नवाचक शब्द लगाओ जिसका मतलब 'किससे' हो। यहाँ तृतीया विभक्ति का प्रयोग है, इसलिए 'केन' सही रहेगा।

उत्तर – प्रश्न 1 का उत्तर: सरसः

प्रश्न 2 का उत्तर: सरसः शोभा बकसहस्रेण न भवति।

प्रश्न 3 का उत्तर: केन सा शोभा न भवति?

उदाहरण 11. श्लोक: 'तोयैरल्पैरपि करुणया भीमभानौ निदाघे, मालाकार! व्यरचि भवता या तरोरस्य पुष्टिः। सा किं शक्या जनयितुमिह प्रावृषेण्येन वाराम्, धरासारानपि विकिरता विश्वतो वारिदेन।।' इसका अन्वय और भावार्थ लिखो।

› पहला कदम है अन्वय लिखना। श्लोक के शब्दों को कर्ता, कर्म, क्रिया के सही क्रम में जमाना है।

› अन्वय: हे मालाकार! भीमभानौ निदाघे भवता अल्पैः तोयैः अपि करुणया अस्य तरोः या पुष्टिः व्यरचि। इह प्रावृषेण्येन विश्वतः वाराम् धरासारान् अपि विकिरता वारिदेन सा पुष्टिः किं जनयितुं शक्या?

› दूसरा कदम है भावार्थ लिखना। अब इस अन्वय और मूल श्लोक को ध्यान में रखते हुए, इसका गहरा अर्थ समझाना है।

› भावार्थ: हे माली! भीषण गर्मी में, जब सूरज आग बरसा रहा था, तब तुमने अपनी दया से थोड़े से पानी से इस पेड़ को जो पोषण दिया, जो इसे पाला-पोसा। क्या वही पोषण, वही देखभाल, वर्षा ऋतु में चारों ओर पानी की मूसलाधार बारिश

करने वाले बादल भी दे सकते हैं? मतलब यह है कि कठिन समय में किया गया थोड़ा-सा भी सहयोग बहुत मायने रखता है, उसकी बराबरी बाद में मिलने वाली बड़ी सहायता भी नहीं कर सकती। माली का योगदान उस संकट के समय अमूल्य था।

उत्तर – अन्वय: हे मालाकार! भीमभानौ निदाघे भवता अल्पैः तोयैः अपि करुणया अस्य तरोः या पुष्टिः व्यरचि। इह प्रावृषेण्येन विश्वतः वाराम् धरासारान् अपि विकिरता वारिदेन सा पुष्टिः किं जनयितुं शक्या?

भावार्थ: भीषण गर्मी में, जब सूरज आग बरसा रहा था, तब तुमने अपनी दया से थोड़े से पानी से इस पेड़ को जो पोषण दिया, क्या वही पोषण, वर्षा ऋतु में चारों ओर मूसलाधार बारिश करने वाला बादल भी दे सकता है? भाव यह है कि कठिन समय में की गई छोटी-सी मदद भी बहुत महत्वपूर्ण होती है।

उदाहरण 12. उदाहरणमनुसृत्य सन्धिं/सन्धि विच्छेदं वा कुरुत: 'निपीतान्यम्बूनि' इसका संधि विच्छेद करें।

› पहला चरण: शब्द को ध्यान से पढ़ें - 'निपीतान्यम्बूनि'।

› दूसरा चरण: देखें कि कहाँ पर वर्णों में बदलाव आया है। यहाँ 'न्य' में 'न्' और 'य' की आवाज़ आ रही है, और 'अ' की आवाज़ भी है। ये 'यण् संधि' का संकेत है।

› तीसरा चरण: 'य' किस वर्ण के स्थान पर आता है? 'इ' या 'ई' के स्थान पर। तो, 'निपीतानि' एक पद हो सकता है।

› चौथा चरण: बचा हुआ भाग 'अम्बूनि' है।

› पाँचवाँ चरण: दोनों पदों को जोड़कर देखें - निपीतानि + अम्बूनि। 'इ' और 'अ' मिलकर 'य' बनते हैं, और शब्द 'निपीतान्यम्बूनि' बन जाता है। हाँ, यही सही है।

› तो इसका संधि विच्छेद होगा: निपीतानि + अम्बूनि।

उत्तर – निपीतानि + अम्बूनि

उदाहरण 13. परीक्षा में पूछा गया - 'नीतिशतकम्' के रचयिता का नाम लिखिए।

› हमें याद करना है कि 'नीतिशतकम्' एक ऐसा ग्रंथ है जो नीतिवचन सिखाता है।

› हमने पढ़ा था कि नीतिवचन लिखने में सबसे प्रसिद्ध कवि कौन हैं।

› हमने 'भा-शि-नी-भ' ट्रिक याद की थी, जिसमें 'नी' से 'नीतिशतकम्' और 'भ' से 'भर्तृहरि' जुड़े थे।

उत्तर – नीतिशतकम् के रचयिता भर्तृहरि हैं।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि श्लोकों के भावार्थ लिखने में 'अन्योक्ति' का अर्थ समझना बहुत ज़रूरी होता है। अक्सर प्रश्न आते हैं कि 'इस श्लोक में अन्योक्ति के माध्यम से क्या संदेश दिया गया है?'

• इस श्लोक का भावार्थ लिखने के लिए तैयार रहना, यह परीक्षा में अक्सर पूछा जाता है। मुख्य विचार 'गुणवत्ता का महत्व' है।

• श्लोक की व्याख्या और उसमें निहित नैतिक मूल्य पर आधारित प्रश्न बोर्ड परीक्षा में अक्सर आते हैं, इसलिए कृतज्ञता के महत्व को अच्छे से समझ लें।

• भावार्थ लिखने वाले प्रश्न अक्सर पूछे जाते हैं, जहाँ आपको श्लोक का गहरा अर्थ समझाना होता है, केवल शब्दार्थ नहीं।

• यह श्लोक भावार्थ के लिए महत्वपूर्ण है। श्लोक का शाब्दिक अर्थ और उसका मानवीय संदर्भ, दोनों को ध्यान से समझें और लिखें।

• यह श्लोक इसके भावार्थ और नैतिक संदेश के लिए महत्वपूर्ण है। परीक्षा में इसका हिंदी या संस्कृत में भावार्थ लिखने को आ सकता है, या चातक की विशेषताएँ पूछी जा सकती हैं।

• यह श्लोक नैतिकता और परोपकार का संदेश देता है, इसलिए इसका भावार्थ और संदेश बोर्ड परीक्षा में अक्सर पूछा जाता है।

• यह श्लोक अक्सर भावार्थ या नैतिक शिक्षा पर आधारित प्रश्नों के लिए महत्वपूर्ण है। श्लोक के प्रतीकात्मक अर्थ को ध्यान से समझें।

• अन्वय बोर्ड परीक्षा में बहुत महत्वपूर्ण होता है। कई बार सीधे-सीधे श्लोक का अन्वय लिखने को आता है, इसलिए इसकी खूब प्रैक्टिस करनी है!

• यह भाग बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर 8-10 अंक के प्रश्न इस पर आधारित होते हैं, इसलिए प्रश्नों के प्रकार और उनके उत्तर देने का अभ्यास अच्छे से करें।

• भावार्थ और अन्वय लेखन बोर्ड परीक्षा में सीधे-सीधे 5 नंबर के लिए आते हैं। इसमें पूरे नंबर तभी मिलेंगे जब तुम श्लोक के सभी शब्दों को सही क्रम में लिखो और भावार्थ में उसका मूल संदेश अपनी भाषा में समझाओ, सिर्फ अनुवाद नहीं।

• संधि और समास के प्रश्न बोर्ड परीक्षा में सीधे-सीधे आते हैं। उदाहरण देकर संधि या समास विच्छेद करने को कहा जाता है, या विग्रह देकर समस्त पद बनाने को। सभी प्रकार की संधियों और समासों के नियमों को उदाहरणों के साथ अच्छी तरह से याद कर लें, खासकर विसर्ग संधि और तत्पुरुष समास पर विशेष ध्यान दें।

• कवि और उनकी रचनाओं का मिलान अक्सर एक या दो नंबर के प्रश्न में आता है। इसे रट लो!

एक नज़र में रिवीज़न

› अन्योक्ति = अप्रत्यक्ष कथन, प्रशंसा/निन्दा का प्रभावशाली माध्यम।

› एक राजहंस = सरोवर की शोभा; गुणवत्ता > संख्या

› उपकार को मानो, प्रत्युपकार करो - कृतज्ञता।

› मालाकार का समय पर पोषण, मेघ के अत्यधिक जल से अधिक महान।

› संकुचित सरोवर में दीन मछली = असहाय की स्थिति।

› चातक: मानी, या इंद्र से जल मांगे या प्यासा मरे, आत्म-सम्मान।

› निस्वार्थ सेवा से स्वयं रिक्त होना ही उत्तम शोभा।

› चातक को सलाह: हर किसी के आगे दीन वचन न कहो।

› शब्दार्थ = कठिन शब्दार्थ; अन्वय = श्लोक को गद्य क्रम में रखना

› श्लोक प्रश्नों के उत्तर: एकपदीय, पूर्ण वाक्य; प्रश्न निर्माण (रेखांकित पद)।

› भावार्थ = श्लोक का गहरा अर्थ; अन्वय = शब्दों को सीधा क्रम में जमाना।

› संधि: वर्ण मेल, समास: पद संक्षेप।

› कवि: जगन्नाथ, माघ, भर्तृहरि। पाठ: अन्योक्तयः (अप्रत्यक्ष कथन)।